

# दि कर्मिक पोस्ट

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

Global  
School Of  
Excellence,  
Obedullaganj

वर्ष : 12, अंक : 16

( प्रति बुधवार ),

इन्दौर, 15 अप्रैल 2026 से 21 अप्रैल 2026

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

## जलवायु संकट तेजी से बदल रहा मौसम चक्र, समय से पहले आ रही गर्मियां, बढ़ रही तपिश



नई दिल्ली। कभी जून में दस्तक देने वाली गर्मी अब अप्रैल-मई में ही शहरों को झुलसाने लगी है। मौसम का पारंपरिक कैलेंडर तेजी से बदल रहा है और वैज्ञानिकों की नई चेतावनी बताती है कि जलवायु संकट के बीच गर्मियां अब पहले से कहीं जल्दी दस्तक देने लगी हैं, ज्यादा लम्बे समय तक टिक रही हैं और तपिश पहले से कहीं ज्यादा होती जा रही हैं। यह इस बात का सबूत है धरती के मौसम का पारंपरिक चक्र तेजी से बदल रहा है।

इस बारे में यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया से जुड़े वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि 1990 से 2023 के बीच दुनिया के कई हिस्सों में गर्मियां हर दशक औसतन छह दिन लंबी हुई हैं, जबकि पहले यह अनुमान करीब चार दिन प्रति दशक का था। यह रफ्तार वैज्ञानिकों के पिछले अनुमानों से करीब 50 फीसदी अधिक है। यानी धरती पर सिर्फ गर्मी नहीं बढ़ रही, उसका मौसम भी पहले के मुकाबले तेजी से लम्बा हो रहा है। कुछ शहरों में तो यह बदलाव और भी ज्यादा चौकाने वाला है। उदाहरण के लिए सिडनी में जहां 1990 में गर्मियां करीब 80 दिन रहती थी, वो अवधि अब बढ़कर 130 दिनों पर पहुंच गई है, यानी वहां हर दशक गर्मियों में करीब 15 दिन की बढ़ोतरी हुई है। इसी तरह टोरंटो में भी गर्मियां हर दशक करीब आठ दिन लम्बी हुई हैं। यह अध्ययन उस अनुभव को वैज्ञानिक आधार देता है जिसे दुनिया भर के लोग अब महसूस करने लगे हैं। आम लोगों को भी लगने लगा है कि मौसम का तालमेल अब बिगड़ चुका है। मतलब जो कभी अपवाद लगता था, वह अब मौजूदा समय में आम होता जा रहा है। इसी तरह कई शहरों में मौसम का पारंपरिक कैलेंडर अब बेअसर होता जा रहा है, क्योंकि जून का इंतजार किए बिना ही गर्मियां दस्तक देने लगी हैं। इस अध्ययन के नतीजे प्रतिष्ठित जर्नल एनवायरनमेंटल रिसर्च लेटर्स में प्रकाशित हुए हैं। अपने इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने 1961 से 2023 के बीच दोनों गोलार्धों के भूमि, महासागर और तटीय क्षेत्रों के तापमान के आंकड़ों का विश्लेषण किया है। साथ ही उन्होंने दुनिया के 10 प्रमुख शहरों में मौसम और तापमान के बदलते रुझानों का भी अध्ययन किया है। अध्ययन में इस बात का भी खुलासा हुआ है कि अब मौसम धीरे-धीरे नहीं बदल रहा। वैज्ञानिकों ने चिंता जताई है कि पहले वसंत से गर्मी और गर्मी से सर्दियों का आगमन जो धीरे-धीरे होता था वो अब पहले की तुलना में अचानक से हो रहा है। यानी तापमान धीरे-धीरे बढ़ने के बजाय अब गर्मी एकाएक दस्तक दे रही है। यह अध्ययन उस अनुभव को वैज्ञानिक आधार देता है जिसे दुनिया भर के लोग अब महसूस करने लगे हैं। आम लोगों को भी लगने लगा है कि मौसम का तालमेल अब बिगड़ चुका है। मतलब जो कभी अपवाद लगता था, वह अब मौजूदा समय में आम होता जा रहा

है। फोटो= आईस्टॉक विशेषज्ञों के मुताबिक यह बदलाव उन प्राकृतिक और मानवीय प्रणालियों को प्रभावित कर सकता है जो मौसम के तय चक्र पर निर्भर हैं। इसका असर खेतों से लेकर जंगलों और शहरों तक हर जगह दिखेगा। इसकी वजह से फूल परागण करने वाले कीटों के सक्रिय होने से पहले खिल सकते हैं। किसान मौसम के पारंपरिक चक्र के आधार पर खेती की योजना नहीं बना पाएंगे और वसंत में बर्फ के तेजी से पिघलने के कारण बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है। इतना ही नहीं इससे बिजली और पानी की मांग भी बढ़ सकती है। साथ ही स्वास्थ्य व्यवस्थाओं पर दबाव बढ़ जाएगा। इस बारे में अध्ययन से जुड़े प्रमुख शोधकर्ता टेड स्कॉट का कहना है, यह बदलाव मौसम के सामान्य चक्र को चुनौती दे रहा है। गर्मी कब आती है और कितनी तेजी से आती है, इसका असर प्रकृति, कृषि और मानव समाज सभी पर पड़ता है।

स्कॉट ने चेतावनी है कि ये बदलाव कई व्यवस्थाओं के लिए गंभीर व्यवधान पैदा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए उत्तरी गोलार्ध में जून को गर्मी की शुरुआत मानकर योजनाएं और नीतियां बनाई जाती रही हैं, ऐसे में समय से पहले आने वाली गर्मी के लिए समाज और व्यवस्थाएं पर्याप्त रूप से तैयार नहीं हो सकतीं। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि सिर्फ गर्मियों की अवधि ही नहीं बढ़ रही, बल्कि उस दौरान जमा होने वाली कुल गर्मी भी खतरनाक रफ्तार से बढ़ रही है। उत्तरी गोलार्ध में 1990 के बाद गर्मियों की कुल ऊष्मा पहले की तुलना में तीन गुणा अधिक तेजी से बढ़ रही है। इसका मतलब है कि धरती सिर्फ ज्यादा दिनों तक गर्म नहीं रह रही, बल्कि इसके साथ ही गर्मी की तपिश भी बढ़ रही है। यह अध्ययन उस अनुभव को वैज्ञानिक आधार देता है जिसे दुनिया भर के लोग अब महसूस करने लगे हैं। आम लोगों को भी लगने लगा है कि मौसम का तालमेल अब बिगड़ चुका है। मतलब जो कभी अपवाद लगता था, वह अब मौजूदा समय में आम होता जा रहा है। फोटो= आईस्टॉक देखा जाए तो यह अध्ययन उस अनुभव को वैज्ञानिक आधार देता है जिसे दुनिया भर के लोग अब महसूस करने लगे हैं। आम लोगों को भी लगने लगा है कि मौसम का तालमेल अब बिगड़ चुका है। मतलब जो कभी अपवाद लगता था, वह अब मौजूदा समय में आम होता जा रहा है। फोटो= आईस्टॉक देखा जाए तो यह अध्ययन उस अनुभव को वैज्ञानिक आधार देता है जिसे दुनिया भर के लोग अब महसूस करने लगे हैं। आम लोगों को भी लगने लगा है कि मौसम का तालमेल अब बिगड़ चुका है।

# 2026 में मानसूनी बारिश के सामान्य से कम रहने का अंदेशा, मौसम विभाग ने जारी किया अनुमान

**मुंबई।** भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने दक्षिण-पश्चिमी मानसून का पूर्वानुमान जारी किया है। जिसमें कहा गया है कि इस साल मानसूनी बारिश के सामान्य से कम होने की आशंका है। यह खबर खेती, पशुपालन और जल संसाधनों के लिए अच्छी नहीं मानी जा सकती है। मानसूनी बारिश अर्थव्यवस्था और आम लोगों के लिए भी बहुत जरूरी है। मौसम विभाग के अनुसार, इस साल मानसून लगभग 92 प्रतिशत रहने की संभावना है। सामान्य बारिश 96 से 104 प्रतिशत के बीच मानी जाती है, इसलिए 92 प्रतिशत को सामान्य से कम कहा जाता है। हालांकि इस अनुमान में बारिश के पांच प्रतिशत तक ऊपर या नीचे होने की संभावना भी रहती है। यह लंबी अवधि के 1971 से 2020 तक के औसत 87 सेमी के अनुमान पर आधारित है। इसका मतलब यह है कि वास्तविक बारिश थोड़ी ज्यादा या कम भी हो सकती है। फिर भी, यह इस ओर इशारा करता है कि इस साल बारिश पूरी तरह से अच्छी नहीं होगी।

भारत में सालभर की कुल बारिश का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा मानसून से आता है। यही बारिश खेतों को पानी देती है और फसलों की खेती को संभव बनाती है। देश के लगभग 45 प्रतिशत खेत अभी भी बारिश पर निर्भर हैं। यानी अगर मानसून कमजोर रहता है, तो सीधे खेती पर असर पड़ता है। इससे किसानों की आय कम हो सकती है। विभाग के द्वारा इस साल एल नीनो बनने की आशंका भी जताई गई है। एल नीनो एक मौसम से जुड़ी घटना है, जिसमें समुद्र का तापमान बढ़ जाता है। इसका असर पूरी दुनिया के मौसम पर पड़ता है। भारत में अक्सर एल नीनो के दौरान बारिश कम होती है। इतिहास बताता है कि कई बार एल नीनो के कारण कमजोर मानसून देखने को मिला है। इसलिए इस साल भी यह चिंता का कारण है। अगर बारिश कम होती है, तो किसान कम बोवाई करते हैं। खासकर खरीफ की फसलें जैसे धान, दालें, मक्का और सोयाबीन प्रभावित होती हैं। कम बारिश के कारण फसलें ठीक से नहीं बढ़ पातीं और उत्पादन घट जाता है। इससे किसानों की आय कम हो जाती है। जब किसानों के पास पैसा कम होता है, तो वे बाजार में कम खर्च करते हैं, जिसका असर पूरे देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। जब फसल उत्पादन कम होता है, तो बाजार में अनाज और सब्जियों की आपूर्ति घट जाती है। इससे कीमतें बढ़ने लगती हैं। यानी कम बारिश का सीधा असर आम लोगों की जेब पर पड़ता है। खाने-पीने की चीजें महंगी हो जाती हैं और महंगाई बढ़ती है। यह स्थिति सरकार और आम जनता दोनों के लिए चुनौती बन जाती है।

हालांकि सिर्फ एल नीनो ही सब कुछ तय नहीं करता। कुछ अन्य मौसमीय प्रणालियां भी मानसून को प्रभावित करते हैं। जैसे कि हिंद महासागर में बनने वाला डिपोल और उत्तरी गोलार्ध में बर्फ की स्थिति। अगर ये कारण अनुकूल रहते हैं, तो वे एल नीनो के प्रभाव को कुछ हद तक कम कर सकते हैं। इसलिए मौसम का पूरा अनुमान कई चीजों पर निर्भर करता है, और अंतिम स्थिति समय के साथ साफ होती है। यह जरूरी नहीं है कि पूरे देश में एक जैसी बारिश हो। कई बार कुल बारिश ठीक होती है, लेकिन वह अलग-अलग जगहों पर असमान रूप से होती है। कहीं बहुत ज्यादा बारिश हो जाती है और कहीं बहुत कम। इससे भी फसलों को नुकसान होता है। इसके अलावा अगर बारिश गलत समय पर होती है - जैसे बोवाई या कटाई के समय, तो भी फसल खराब हो सकती है। मौसम विभाग के अनुमान के अनुसार, देश के ज्यादातर हिस्सों में कम बारिश होने के आसार हैं। लेकिन कुछ इलाकों जैसे पूर्वोत्तर भारत, दक्षिण भारत और उत्तर-पश्चिम के कुछ हिस्सों में सामान्य या बेहतर बारिश होने की संभावना भी जताई गई है। इसका मतलब है कि पूरे देश में एक जैसी स्थिति नहीं होगी। कुछ जगहों पर स्थिति बेहतर भी रह सकती है। मौसम विभाग ने अपने पूर्वानुमान में कहा कि जनवरी से मार्च 2026 की अवधि के दौरान उत्तरी गोलार्ध का बर्फबारी का आवरण और साथ ही यूरेशिया का बर्फ का आवरण भी सामान्य से थोड़ा ही कम दर्ज किया गया है, जो दक्षिण-पश्चिम मानसून के विकसित होने और मानसूनी बारिश के लिए अनुकूल है। विभाग के लंबी अवधि वाले इस पूर्वानुमान में सूखे वाली जगहों की जानकारी नहीं दी है, लेकिन जिन राज्यों में सामान्य से कम बारिश जैसे हालात बनने की आशंका अधिक जताई गई है, उनमें उत्तर भारत के कई इलाकों, खासकर गंगा के मैदानी और आसपास के पठारी क्षेत्र शामिल हैं। कुल मिलाकर, इस साल का मानसून थोड़ा कमजोर रहने का अंदेशा जताया गया है। यह स्थिति बहुत गंभीर नहीं है, लेकिन चिंता जरूर पैदा करती है। सबसे बड़ी बात यह है कि भारत की खेती और अर्थव्यवस्था अभी भी मानसून पर काफी निर्भर है। इसलिए हर साल मानसून का अनुमान बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। सरकार, किसान और आम लोगों को इस स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए। सही योजना और सावधानी से इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है।

## कैसे अंटार्कटिक महासागर की धारा और पृथ्वी की जलवायु में हुआ बड़ा बदलाव

**न्यूयार्क।** पृथ्वी पर समुद्र की धाराएं जलवायु को नियंत्रित करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाती हैं। इन्हीं में से एक सबसे शक्तिशाली धारा है अंटार्कटिक सर्कम्पोलर करंट (एसीसी), जो अंटार्कटिका के चारों ओर लगातार पश्चिम से पूर्व दिशा में घूमती रहती है। यह धारा इतनी विशाल है कि यह पृथ्वी की सभी नदियों से मिलकर बहने वाले पानी से भी 100 गुना से अधिक पानी को अपने साथ ले जाती है।

हाल ही में वैज्ञानिकों ने इसके बनने और विकसित होने के इतिहास पर एक अहम अध्ययन किया है। समुद्री लू से महासागर की 'कार्बन बेल्ट' पर असर, जलवायु परिवर्तन के खतरे बढ़े अंटार्कटिक सर्कम्पोलर करंट का मॉडल सिमुलेशन, जिसका निर्माण लगभग 3.4 करोड़ साल पहले शुरू हुआ था। करीब 3.4 करोड़ साल पहले पृथ्वी की जलवायु में बड़ा बदलाव आया था। उस समय पृथ्वी एक गर्म ग्रीनहाउस अवस्था से ठंडी आइसहाउस अवस्था में बदल रही थी। पहले ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ लगभग नहीं थी, लेकिन धीरे-धीरे वहां विशाल बर्फ की चादरें बनने लगीं। इसी समय ऑस्ट्रेलिया, अंटार्कटिका और दक्षिण अमेरिका के बीच मौजूद समुद्री रास्ते चौड़े और गहरे होने लगे। इससे अंटार्कटिक सर्कम्पोलर करंट (एसीसी) के बनने की शुरुआत हुई। प्रोसीडिंग्स ऑफ दि नेशनल अकादमी ऑफ साइंसेज में प्रकाशित इस नए अध्ययन को जर्मनी के अल्फ्रेड वेगेनर इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने किया है। उन्होंने कंप्यूटर आधारित जलवायु मॉडल का उपयोग किया और लगभग 3.35 करोड़ वर्ष पुराने पृथ्वी के वातावरण को फिर से बनाया। इस मॉडल में उन्होंने समुद्र, वायुमंडल और भूमि की

स्थिति को उस समय के अनुसार जोड़ा। इसके साथ ही उन्होंने पुराने भूवैज्ञानिक आंकड़ों की भी तुलना की ताकि परिणाम अधिक सटीक हो सकें। शोध में पाया गया कि एसीसी का निर्माण केवल समुद्री रास्तों के खुलने से नहीं हुआ। इसमें हवा की दिशा और ताकत की भी बड़ी भूमिका थी। जब ऑस्ट्रेलिया धीरे-धीरे अंटार्कटिका से दूर चला गया, तब वहां से गुजरने वाली तेज पश्चिमी हवाएं सीधे समुद्री रास्तों से टकराने लगीं। यही हवाएं पानी को लगातार एक दिशा में घुमाने लगीं और धीरे-धीरे एक मजबूत घेरा बना, जिसे हम एसीसी कहते हैं। दिलचस्प बात यह है कि शुरुआती समय में यह धारा आज जैसी एक समान नहीं थी। वैज्ञानिकों के अनुसार उस समय अटलांटिक और हिंद महासागर वाले हिस्सों में यह धारा मजबूत थी, लेकिन प्रशांत महासागर के हिस्से में यह बहुत कमजोर थी। इसका मतलब यह है कि शुरुआत में दक्षिणी महासागर दो अलग-अलग जल प्रणालियों की तरह व्यवहार कर रहा था। एसीसी के बनने का पृथ्वी की जलवायु पर बहुत बड़ा असर पड़ा। इस धारा ने अंटार्कटिका को बाकी गर्म महासागरों से अलग कर दिया, जिससे वहां ठंड बढ़ने लगी और बर्फ की परतें बनने लगीं। इसके अलावा यह धारा महासागर में कार्बन डाइऑक्साइड को अधिक मात्रा में सोखने में मदद करने लगी। उस समय वायुमंडल में सीओ2 का स्तर लगभग 600 पार्ट्स प्रति मिलियन (पीपीएम) था, जो बहुत अधिक माना जाता है। धीरे-धीरे महासागर ने इस गैस को अवशोषित किया, जिससे पृथ्वी का तापमान कम होने लगा।

# होर्मुज गतिरोध और अल नीनो से वैश्विक खाद्य आपूर्ति पर 'परफेक्ट स्टॉर्म' का खतरा रिपोर्ट

**न्यूयार्क।** एफएओ के अनुसार, दुनिया के 20 से 45 प्रतिशत तक महत्वपूर्ण कृषि इनपुट जैसे उर्वरक और ऊर्जा इसी समुद्री मार्ग (स्ट्रेट ऑफ होर्मुज) से होकर गुजरते हैं और अगर वर्तमान में जारी गतिरोध यदि जल्द खत्म नहीं हुआ, तो यह वैश्विक खाद्य आपूर्ति और कीमतों पर गंभीर असर डाल सकता है।

एफएओ ने आगाह किया कि दुनिया भर के किसान पहले से ही बहुत कम मुनाफे पर खेती कर रहे हैं। यदि वे घाटे में जाकर खेती छोड़ने या दिवालिया होने को मजबूर होते हैं, तो वैश्विक खाद्य आपूर्ति की स्थिति लंबे समय तक खराब रह सकती है। एफएओ के मुताबिक मार्च में खाद्य मूल्य सूचकांक अपेक्षाकृत स्थिर रहा, क्योंकि अनाज सहित अधिकांश खाद्य वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति थी। अब अप्रैल में समस्या बढ़ रही है और मई में और बढ़ेगी, क्योंकि किसान यह तय करेंगे कि उन्हें कितनी और कौन-सी फसल बोनी है, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उन्हें खाद (उर्वरक) मिल पा रही है या नहीं। इतना ही नहीं, तेल की कीमतें बढ़ने पर कुछ किसान खाने वाली फसलों की बजाय बायोफ्यूल (ईंधन बनाने वाली फसल) उगाने लग सकते हैं, जिससे खाने की चीजों की कमी हो सकती है। प्रेस विज्ञप्ति में एफएओ के अधिकारी लैबोर्डे के हवाले से कहा गया है कि दुनिया इस समय इनपुट संकट का सामना कर रही है और यदि समय पर कदम नहीं उठाए गए, तो यह स्थिति गंभीर आपदा में बदल सकती है। एफएओ की रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि किसानों को पर्याप्त उर्वरक और अन्य संसाधन नहीं मिले तो इस वर्ष और 2027 में फसल उत्पादन घटेगा। इसके चलते खाद्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि और खुदरा महंगाई बढ़ने की आशंका है, जो आने वाले वर्षों तक बनी रह सकती है। खाद्य एवं कृषि संगठन ने देशों से अपील की है कि वे बायोफ्यूल से जुड़े अनिवार्य प्रावधानों पर पुनर्विचार करें और ऊर्जा व उर्वरकों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने से बचें, क्योंकि इससे वैश्विक बाजार में असंतुलन और बढ़ सकता है। एफएओ ने यह भी सुझाव दिया है कि यदि होर्मुज में गतिरोध जारी रहता है, तो जोखिम झेल रहे देशों को तत्काल वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए। इसके लिए इंटरनेशनल मॉनिटरी फंड की बैलेंस ऑफ पेमेंट सुविधाओं और फूड शॉक विंडो का उपयोग किया जा सकता है। यह व्यवस्था 2022 में सुझाई गई फूड इम्पोर्ट फाइनेंसिंग पहल के आधार पर विकसित की गई है। इस तंत्र के जरिए जरूरतमंद देशों को तुरंत वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा सकती है, ताकि वे समय पर उर्वरक खरीद सकें और खेती प्रभावित न हो। साथ ही, इससे देशों के बीच सब्सिडी की होड़ से बाजार के बिगड़ने का खतरा भी कम होगा। एफएओ के मुख्य अर्थशास्त्री मैक्सिमो टोरेरो ने कहा कि उर्वरक और ऊर्जा बाजार बहुत कम लचीले होते हैं, इसलिए आपूर्ति में थोड़ी कमी भी कीमतों में तेज उछाल ला सकती है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जहाजों की आवाजाही जल्द बहाल नहीं हुई, तो बाजार बहुत तेजी से प्रतिक्रिया करेगा। टोरेरो ने कहा कि यह संकट प्राकृतिक आपदा नहीं है और सरकारें मिलकर इसे हल कर सकती हैं। हालांकि, यदि मौजूदा स्थिति पर समय रहते काबू नहीं पाया गया और इसके साथ श्वेत हृदय जैसे जलवायु प्रभाव भी जुड़ गए, तो परफेक्ट स्टॉर्म जैसी स्थिति बन सकती है, जो महामारी के बाद के संकट से भी अधिक गंभीर होगी। एफएओ ने स्पष्ट किया है कि जोखिम पहले से कहीं अधिक हैं और त्वरित, समन्वित वैश्विक कार्रवाई ही संभावित खाद्य संकट को टाल सकती है।

## यमुना किनारे कचरा डंपिंग पर एनजीटी सरक्ट, एमसीडी से मांगी प्रगति रिपोर्ट

**नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने वजीराबाद और जगतपुर गांव के पास पुश्ता रोड और यमुना के घाटों पर घरेलू, व्यावसायिक कचरे और मलबा डंप किए जाने के मामले पर संज्ञान लिया।**

इस मामले में दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की ओर से दाखिल स्थिति रिपोर्ट में दावा किया गया कि राम घाट, श्याम घाट, काली घाट और हनुमान चौक समेत चिन्हित स्थानों से कचरा हटा दिया गया है। साथ ही, फिक्स्ट कंटेनर ट्रांसफर स्टेशन के लिए एक जगह तय कर ली गई है और सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग ने कुछ शर्तों के साथ एनओसी (नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट) भी दे दी है। एमसीडी के वकील ने अदालत को जानकारी दी है कि फिक्स्ट कॉन्टेनर ट्रांसफर स्टेशन के निर्माण से पहले कुछ जरूरी अनुमति और एनओसी लेना बाकी है। इस पर एनजीटी ने निर्देश दिया कि एमसीडी का सक्षम अधिकारी हलफनामा दाखिल कर निर्माण कार्य की प्रगति और इसे तय समय में पूरा करने की योजना पेश करे।

वहीं, याचिकाकर्ता के वकील ने इस दावे पर सवाल उठाया कि कचरा पूरी तरह हटा दिया गया है। उन्होंने संबंधित साक्ष्यों के साथ जवाब दाखिल करने के लिए अदालत से समय मांगा है। मध्य प्रदेश में डिंडोरी जिले के किसलपुरी गांव में चले



रहे एक अवैध स्टोन क्रशर के खिलाफ एनजीटी ने जांच के निर्देश दिए हैं। 9 अप्रैल 2026 को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) की केंद्रीय पीठ ने इस मामले में तीन सदस्यीय संयुक्त समिति गठित करने के निर्देश दिए हैं। इस समिति में डिंडोरी के जिला कलेक्टर,

मध्य प्रदेश भूविज्ञान एवं खनन विभाग तथा मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के एक-एक प्रतिनिधि शामिल होंगे। ट्रिब्यूनल ने समिति को मौके का निरीक्षण कर छह सप्ताह के भीतर तथ्यात्मक एवं कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा है। इस मामले में दायर याचिका में आरोप लगाया गया है कि संबंधित स्टोन क्रशर अवैध रूप से कृषि भूमि पर चल रहा है। इस यूनिट ने न तो भूमि उपयोग में बदलाव (डायवर्जन) की कानूनी अनुमति ली है और न ही पर्यावरण से जुड़ी आवश्यक मंजूरीयां प्राप्त की हैं। याचिका के मुताबिक यह क्रशर वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981 और जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1974 के तहत जरूरी 'कंसेंट टू एस्टैब्लिश' और 'कंसेंट टू ऑपरेट' के बिना चल रहा है। आवेदन में कहा गया है कि स्टोन क्रशर के अनियंत्रित संचालन से क्षेत्र के पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुंच रही है।

# सिर्फ 2.5 अरब लोगों का बोझ सह सकती है धरती, आबादी पहुंची 8 अरब पार-शोध

ग्रीनलैंड आज पूरी दुनिया एक बड़े सवाल का सामना कर रही है, क्या हमारी पृथ्वी इतनी आबादी और संसाधनों के उपयोग को लंबे समय तक संभाल सकती है? हाल ही में किए गए एक शोध में बताया गया है कि इंसान पृथ्वी की क्षमता से ज्यादा संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं। इसका असर हमारे भोजन, जलवायु और जीवन की गुणवत्ता पर पड़ रहा है।

पिछले दो सौ वर्षों में दुनिया की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। पहले ऐसा माना जाता था कि जितने ज्यादा लोग होंगे, उतनी तेजी से विकास होगा। अधिक लोग मतलब अधिक काम, अधिक खोज और नई तकनीकें। इससे उत्पादन बढ़ा और जीवन आसान हुआ। लेकिन यह स्थिति हमेशा एक जैसी नहीं रही। जैसे-जैसे समय बीता, संसाधनों पर दबाव बढ़ने लगा। अब स्थिति यह है कि पृथ्वी उतनी तेजी से संसाधन नहीं बना पा रही है जितनी तेजी से हम उनका उपयोग कर रहे हैं। एनवायरमेंटल रिसर्च लेटर्स में प्रकाशित एक शोध के अनुसार, 1950 के पहले तक जनसंख्या वृद्धि की गति बढ़ रही थी। लेकिन 1960 के बाद यह गति धीमी होने लगी, जबकि कुल जनसंख्या बढ़ती रही। इसका मतलब यह है कि अब ज्यादा लोग होने से उतना फायदा नहीं हो रहा जितना पहले होता था। शोध में यह भी बताया गया है कि यदि सभी लोग आरामदायक जीवन जीना चाहें और संसाधनों का संतुलित उपयोग करें, तो पृथ्वी लगभग 2.5 अरब लोगों को ही लंबे समय तक टिकाऊ तरीके से सहन कर सकती है। आज दुनिया की आबादी लगभग आठ अरब से अधिक है और आने वाले समय में यह 11 से 12 अरब तक पहुंच सकती है। इसका मतलब है कि हम पहले से ही पृथ्वी की क्षमता से कहीं ज्यादा दबाव बना रहे हैं। अब तक मानव समाज ने अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कोयला, पेट्रोल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों का बहुत अधिक उपयोग किया है। इनसे हमें ऊर्जा मिली, खेती में उत्पादन बढ़ा और उद्योगों का विकास हुआ। लेकिन इसके साथ ही पर्यावरण को भारी नुकसान भी हुआ। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों की कमी जैसे



संकट बढ़ते गए। यह स्थिति लंबे समय तक नहीं चल सकती। जनसंख्या बढ़ने और संसाधनों के अधिक उपयोग से कई समस्याएं सामने आ रही हैं। तापमान में वृद्धि हो रही है, जंगल कम हो रहे हैं और कई जीव-जंतु विलुप्त हो रहे हैं। इसके अलावा पानी और भोजन की कमी भी एक बड़ी समस्या बन सकती है। गरीब और कमजोर वर्गों पर इसका असर सबसे ज्यादा पड़ता है, जिससे असमानता और बढ़ती है। यह समझना जरूरी है कि

केवल जनसंख्या ही समस्या नहीं है। असली समस्या है संसाधनों का असमान और अत्यधिक उपयोग। कुछ देशों में लोग बहुत ज्यादा संसाधन इस्तेमाल करते हैं, जबकि कुछ जगहों पर लोगों को बुनियादी सुविधाएं भी नहीं मिलती। इसलिए समस्या का हल सिर्फ जनसंख्या कम करना नहीं है, बल्कि संसाधनों का सही और संतुलित उपयोग करना भी है। पृथ्वी की क्षमता से अधिक संसाधनों का असमान व अंधाधुंध उपयोग हो रहा है, जिससे पर्यावरण, जलवायु और

मानव जीवन पर गंभीर दबाव बढ़ता जा रहा है। इस स्थिति से बचने के लिए हमें कई स्तरों पर काम करना होगा। सबसे पहले, लोगों को शिक्षित करना जरूरी है ताकि वे जागरूक बनें और जिम्मेदारी से फैसले लें। महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार से जनसंख्या वृद्धि को संतुलित किया जा सकता है। इसके साथ ही स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना भी जरूरी है। हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाना होगा और जरूरत से ज्यादा उपभोग से बचना होगा। यह शोध किसी अचानक विनाश की चेतावनी नहीं देता, बल्कि हमें समय रहते संभलने का मौका देता है। अगर हम अभी से सही कदम उठाते हैं, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और संतुलित दुनिया बनाई जा सकती है। अंत में यही कहा जा सकता है कि पृथ्वी हमारी जरूरतों को पूरा कर सकती है, लेकिन लालच को नहीं। इसलिए हमें समझदारी और जिम्मेदारी के साथ अपने संसाधनों का उपयोग करना होगा।

## प्रदूषण का हॉटस्पॉट बनता ओडिशा

ओडिशा। सरकारी आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला है कि एक बार फिर देश में अंगुल सबसे अधिक प्रदूषित शहर रहा। इस दौरान वहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 321 दर्ज किया गया, जो 'बेहद खराब' श्रेणी में आता है। गौरतलब है कि इससे पहले 10 अप्रैल को ओडिशा के इस शहर में वायु गुणवत्ता सूचकांक 313 दर्ज किया गया था। मतलब कि पिछले 24 घंटों में वहां प्रदूषण के स्तर में आठ अंकों का उछाल आया है। रुझानों में यह भी सामने आया है कि अंगुल की हवा में ओजोन पूरी तरह हावी है। देखा जाए तो वहां फिजाओं में घुला जहर इतना ज्यादा है कि वो लोगों को बेहद बीमार बना देने के लिए काफी है। अंगुल में स्थिति किस कदर खराब है, इसी बात से समझा जा सकता है कि वहां प्रदूषण का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित सुरक्षित सीमा से 400 फीसदी अधिक है। दूसरी तरफ देश में चामराजनगर की हवा सबसे साफ है, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक महज 28 रिकॉर्ड किया गया। ऐसे में यदि देश के सबसे प्रदूषित शहर अंगुल की तुलना चामराजनगर से करें तो वहां स्थिति 11.5 गुणा खराब है। राजधानी दिल्ली में कल से प्रदूषण में गिरावट आई है। दिल्ली में जहां कल एक्यूआई 151 दर्ज किया गया था, जो आज घटकर 123 पर पहुंच गया। मतलब कि पिछले 24 घंटों में सूचकांक में 28 अंकों की कमी दर्ज की गई है। बता दें कि 2026 के दौरान दिल्ली में साल का सबसे साफ दिन 20 मार्च और आठ अप्रैल 2026 को दर्ज किया गया, जब एक्यूआई 93 पर पहुंच गया था। इसके बाद 01 अप्रैल को सूचकांक 113 दर्ज किया गया। वहीं आज सूचकांक 114 रिकॉर्ड किया गया है। दूसरी तरफ 18 जनवरी 2026 को दिल्ली में साल का सबसे प्रदूषित दिन दर्ज किया गया था, जब एक्यूआई बढ़कर 440 तक पहुंच गया था। दिल्ली की तरह ही फरीदाबाद में भी कल से प्रदूषण में कमी आई है। फरीदाबाद में जहां कल वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 143 दर्ज किया गया था, जो आज घटकर 132 पर पहुंच गया। इसका मतलब है कि वायु गुणवत्ता आज भी मध्यम श्रेणी में बनी हुई है।